Indian Journal of Modern Research and Reviews

This Journal is a member of the *'Committee on Publication Ethics'*

Online ISSN:2584-184X

Review Article

शहरी और ग्रामीण समाज में समलैंगिकता के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. सुरभि गोस्वामी

पीएच.डी., समाजशास्त्र विभाग, वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान, भारत

Corresponding Author: *डॉ. सुरभि गोस्वामी

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.19352549

सारांश

समकालीन समाज में लैंगिकता और यौनिक पहचान से जुड़े मुद्दों पर व्यापक चर्चा हो रही है। विशेष रूप से समलैंगिकता के विषय ने सामाजिक, सांस्कृतिक और कानूनी स्तर पर महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया है। लंबे समय तक भारतीय समाज में समलैंगिकता को सामाजिक मान्यताओं के विरुद्ध समझा जाता रहा और इसे सार्वजनिक चर्चा से बाहर रखा गया। परिणामस्वरूप समलैंगिक व्यक्तियों को सामाजिक अस्वीकृति, भेदभाव और मानसिक दबाव का सामना करना पड़ा।

हालांकि पिछले कुछ वर्षों में सामाजिक परिवर्तनों, शिक्षा के प्रसार, मीडिया के प्रभाव और न्यायिक निर्णयों के कारण समाज में इस विषय के प्रति दृष्टिकोण में परिवर्तन दिखाई देने लगा है। विशेष रूप से शहरी क्षेत्रों में समलैंगिकता से संबंधित चर्चाएँ अपेक्षाकृत अधिक खुलकर सामने आने लगी हैं। वहीं दूसरी ओर ग्रामीण क्षेत्रों में पारंपरिक सामाजिक संरचना और सांस्कृतिक मान्यताओं का प्रभाव अधिक होने के कारण इस विषय के प्रति दृष्टिकोण अपेक्षाकृत रूढ़िवादी दिखाई देता है।

प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य शहरी और ग्रामीण समाज में समलैंगिकता के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन करना है। इस शोध के माध्यम से यह समझने का प्रयास किया गया है कि दोनों सामाजिक परिवेशों में समलैंगिकता को किस प्रकार देखा और समझा जाता है तथा इन दृष्टिकोणों को प्रभावित करने वाले सामाजिक और सांस्कृतिक कारक कौन-कौन से हैं।

यह अध्ययन इस बात को भी स्पष्ट करता है कि आधुनिक शिक्षा, मीडिया और शहरी जीवन शैली के कारण शहरी समाज में समलैंगिकता के प्रति अपेक्षाकृत अधिक सहिष्णुता देखने को मिलती है, जबकि ग्रामीण समाज में पारंपरिक मान्यताओं के कारण अभी भी इस विषय को सामाजिक स्वीकृति प्राप्त करने में अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इस प्रकार यह अध्ययन समलैंगिकता के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण में मौजूद भिन्नताओं को समझने का एक महत्वपूर्ण प्रयास है।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2584-184X
- **Received:** 02-02-2026
- **Accepted:** 26-03-2026
- **Published:** 29-03-2026
- **MRR:**4(3); 2026: 369-374
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

डॉ. सुरभि गोस्वामी. शहरी और ग्रामीण समाज में समलैंगिकता के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन. इंडियन जर्नल ऑफ मॉडर्न रिसर्च रिव्यू. 2026;4(3):369-374.

Access this Article Online

www.multiarticlesjournal.com

मुख्य शब्द: समलैंगिकता, सामाजिक दृष्टिकोण, शहरी समाज, ग्रामीण समाज, लैंगिक पहचान

© 2026 डॉ. सुरभि गोस्वामी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

प्रस्तावना

मानव समाज विविधताओं से भरा हुआ है और इस विविधता में लैंगिक पहचान तथा यौनिक अभिविन्यास भी एक महत्वपूर्ण आयाम है। समाजशास्त्र के क्षेत्र में यह लंबे समय से अध्ययन का विषय रहा है कि समाज विभिन्न प्रकार की पहचानों को किस प्रकार स्वीकार करता है या अस्वीकार करता है। समलैंगिकता भी इसी प्रकार की एक सामाजिक वास्तविकता है, जिसे लंबे समय तक सामाजिक चर्चा से दूर रखा गया और जिसे अक्सर सामाजिक मान्यताओं के विरुद्ध माना गया।

भारतीय समाज पारंपरिक रूप से परिवार-केंद्रित समाज रहा है, जहाँ विवाह और पारिवारिक संबंधों को अत्यधिक महत्व दिया जाता है। इस सामाजिक व्यवस्था में विषमलैंगिक विवाह को सामान्य और स्वीकृत माना गया है। इसके विपरीत समलैंगिक संबंधों को अक्सर सामाजिक मान्यताओं के अनुरूप नहीं समझा गया। परिणामस्वरूप समलैंगिक व्यक्तियों को अपने अस्तित्व और पहचान के साथ समाज में अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ा।

समाज में प्रचलित रूढ़िवादी धारणाओं के कारण समलैंगिकता को लंबे समय तक सामाजिक विचलन के रूप में देखा गया। कई बार यह धारणा भी प्रचलित रही कि समलैंगिकता पश्चिमी संस्कृति का प्रभाव है, जबकि ऐतिहासिक और सांस्कृतिक साक्ष्य यह दर्शाते हैं कि लैंगिक विविधता विभिन्न समाजों में प्राचीन काल से विद्यमान रही है।

वर्तमान समय में वैश्वीकरण, शिक्षा के प्रसार और आधुनिक संचार माध्यमों के विकास के कारण समाज में इस विषय पर जागरूकता बढ़ी है। मीडिया, साहित्य और सामाजिक आंदोलनों ने समलैंगिकता से जुड़े मुद्दों को सार्वजनिक विमर्श का हिस्सा बनाया है। विशेष रूप से युवाओं के बीच लैंगिक विविधता के प्रति अपेक्षाकृत अधिक सहिष्णुता दिखाई देने लगी है।

फिर भी यह परिवर्तन पूरे समाज में समान रूप से दिखाई नहीं देता। शहरी और ग्रामीण समाज के सामाजिक परिवेश में काफी अंतर पाया जाता है। शहरी क्षेत्रों में शिक्षा, रोजगार के अवसर, मीडिया और वैश्विक संपर्क के कारण सामाजिक दृष्टिकोण अपेक्षाकृत अधिक उदार दिखाई देता है। इसके विपरीत ग्रामीण समाज में पारंपरिक सामाजिक संरचना और सांस्कृतिक मान्यताओं का प्रभाव अधिक होने के कारण समलैंगिकता के प्रति दृष्टिकोण अपेक्षाकृत रूढ़िवादी रहता है।

इसी संदर्भ में शहरी और ग्रामीण समाज के दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है। यह समझना आवश्यक है कि इन दोनों सामाजिक परिवेशों में समलैंगिकता को किस प्रकार देखा जाता है और किन सामाजिक कारकों के कारण इन दृष्टिकोणों में अंतर उत्पन्न होता है। प्रस्तुत अध्ययन इसी दिशा में एक प्रयास है, जिसका उद्देश्य शहरी और ग्रामीण समाज में समलैंगिकता के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण को समझना और उनका तुलनात्मक विश्लेषण करना है।

समलैंगिकता की अवधारणा

समलैंगिकता मानव यौनिकता का एक ऐसा आयाम है जिसमें व्यक्ति का भावनात्मक, मानसिक तथा यौन आकर्षण अपने ही लिंग के व्यक्तियों की ओर होता है। सरल शब्दों में कहा जाए तो जब कोई पुरुष किसी अन्य पुरुष के प्रति या कोई महिला किसी अन्य महिला के प्रति प्रेम, आकर्षण अथवा भावनात्मक लगाव अनुभव करती है, तो उसे समलैंगिकता कहा जाता है। यह केवल यौन व्यवहार तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें भावनात्मक संबंध, सामाजिक पहचान और व्यक्तिगत अनुभव भी शामिल होते हैं।

समाजशास्त्रीय दृष्टि से समलैंगिकता को मानव समाज में विद्यमान लैंगिक विविधता के एक स्वाभाविक रूप के रूप में समझा जाता है। विभिन्न समाजों और संस्कृतियों में लैंगिक अभिव्यक्ति और यौनिक पहचान के कई रूप पाए जाते हैं। हालांकि कई समाजों में इसे स्वीकार किया गया है, वहीं अनेक समाजों में इसे सामाजिक मान्यताओं के विरुद्ध समझा गया और इसके कारण समलैंगिक व्यक्तियों को सामाजिक अस्वीकृति का सामना करना पड़ा।

समलैंगिकता को समझने के लिए यह भी आवश्यक है कि लैंगिक पहचान और यौनिक अभिविन्यास के बीच अंतर को स्पष्ट किया जाए। लैंगिक पहचान से आशय उस आंतरिक अनुभव से है जिसके आधार पर व्यक्ति स्वयं को पुरुष, महिला या किसी अन्य लैंगिक पहचान के रूप में महसूस करता है। वहीं यौनिक अभिविन्यास से आशय उस आकर्षण से है जो व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति के प्रति अनुभव करता है। इस प्रकार समलैंगिकता मुख्यतः यौनिक अभिविन्यास से संबंधित अवधारणा है।

इतिहास में कई बार समलैंगिकता को मानसिक विकार या सामाजिक विचलन के रूप में प्रस्तुत किया गया, किन्तु आधुनिक मनोवैज्ञानिक और समाजशास्त्रीय अध्ययनों ने इस धारणा को अस्वीकार कर दिया है। विश्व स्वास्थ्य संगठन सहित अनेक अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं ने स्पष्ट किया है कि समलैंगिकता मानव यौनिकता का एक सामान्य रूप है और इसे किसी प्रकार की बीमारी या विकार नहीं माना जा सकता।

समलैंगिकता से संबंधित चर्चा में अक्सर LGBTQ समुदाय का उल्लेख किया जाता है। इस शब्द में लैस्बियन, गे, बाइसेक्सुअल, ट्रांसजेंडर तथा अन्य लैंगिक पहचानों को शामिल किया जाता है। यह शब्द उन सभी व्यक्तियों की पहचान को दर्शाता है जो पारंपरिक विषमलैंगिक ढाँचे से भिन्न लैंगिक या यौनिक पहचान रखते हैं।

भारतीय समाज में समलैंगिकता की अवधारणा को लेकर लंबे समय तक भ्रम और पूर्वाग्रह बने रहे। कई बार इसे केवल नैतिकता या परंपरा के दृष्टिकोण से देखा गया और इसके सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक पहलुओं पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया गया। परिणामस्वरूप समलैंगिक व्यक्तियों को अपने अस्तित्व और पहचान को स्वीकार कराने में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।

वर्तमान समय में शिक्षा, मीडिया और सामाजिक आंदोलनों के प्रभाव से इस विषय पर चर्चा बढ़ी है। विशेष रूप से युवाओं के बीच लैंगिक विविधता को समझने और स्वीकार करने की प्रवृत्ति बढ़ती हुई दिखाई देती है। इसके बावजूद समाज के विभिन्न वर्गों में समलैंगिकता के प्रति दृष्टिकोण अभी भी समान नहीं है।

सैद्धांतिक पृष्ठभूमि

समलैंगिकता के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण को समझने के लिए समाजशास्त्रीय सिद्धांतों का सहारा लेना आवश्यक है। विभिन्न समाजशास्त्रियों ने यह समझने का प्रयास किया है कि समाज किस प्रकार कुछ व्यवहारों या पहचानों को स्वीकार करता है और कुछ को अस्वीकार कर देता है। इस संदर्भ में लेबलिंग सिद्धांत, कलंक सिद्धांत तथा सामाजिक पहचान सिद्धांत विशेष रूप से महत्वपूर्ण माने जाते हैं।

© 2026 डॉ. सुरभि गोस्वामी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

- **लेबलिंग सिद्धांत**

लेबलिंग सिद्धांत के अनुसार समाज कुछ व्यवहारों या व्यक्तियों को विशेष प्रकार के सामाजिक लेबल प्रदान करता है। जब किसी व्यक्ति के व्यवहार को समाज के प्रचलित मानदंडों से भिन्न माना जाता है, तो समाज उसे विचलित या असामान्य के रूप में लेबल कर देता है।
समलैंगिकता के संदर्भ में भी यही प्रक्रिया देखने को मिलती है। लंबे समय तक समाज में समलैंगिक व्यक्तियों को असामान्य या विचलित मानकर उनके ऊपर नकारात्मक लेबल लगाए गए। इन लेबलों के कारण समलैंगिक व्यक्तियों को सामाजिक अस्वीकृति और भेदभाव का सामना करना पड़ा।

- **कलंक सिद्धांत**

समाजशास्त्री एर्विंग गोफमैन ने अपने कलंक सिद्धांत में यह बताया कि समाज कुछ पहचानों या व्यवहारों को कलंकित कर देता है। जब किसी व्यक्ति को समाज के मानकों से भिन्न समझा जाता है, तो उसे सामाजिक कलंक का सामना करना पड़ता है।
समलैंगिक व्यक्तियों के संदर्भ में भी यही स्थिति देखी जा सकती है। कई समाजों में समलैंगिकता को सामाजिक कलंक के रूप में देखा जाता है, जिसके कारण समलैंगिक व्यक्ति अपनी पहचान को सार्वजनिक रूप से व्यक्त करने से डरते हैं। यह स्थिति उनके मानसिक स्वास्थ्य और सामाजिक जीवन पर भी प्रभाव डालती है।

- **सामाजिक पहचान सिद्धांत**

सामाजिक पहचान सिद्धांत यह बताता है कि व्यक्ति की पहचान केवल व्यक्तिगत अनुभवों से नहीं बनती, बल्कि समाज के साथ उसके संबंधों से भी निर्मित होती है। व्यक्ति स्वयं को जिस सामाजिक समूह से जोड़ता है, वह उसकी पहचान का महत्वपूर्ण हिस्सा बन जाता है।
समलैंगिक व्यक्तियों के लिए अपनी लैंगिक पहचान को स्वीकार करना और उसे सामाजिक रूप से व्यक्त करना कई बार चुनौतीपूर्ण होता है। समाज के नकारात्मक दृष्टिकोण के कारण कई लोग अपनी वास्तविक पहचान को छिपाने के लिए बाध्य हो जाते हैं।
इन सिद्धांतों के माध्यम से यह समझा जा सकता है कि समलैंगिकता के प्रति समाज का दृष्टिकोण केवल व्यक्तिगत विचारों का परिणाम नहीं होता, बल्कि यह व्यापक सामाजिक संरचनाओं, सांस्कृतिक मान्यताओं और सामाजिक प्रक्रियाओं से भी प्रभावित होता है।

भारतीय समाज में समलैंगिकता का ऐतिहासिक संदर्भ

समलैंगिकता के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण को समझने के लिए भारतीय समाज के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संदर्भ को ध्यान में रखना आवश्यक है। इतिहास के विभिन्न कालखंडों में लैंगिकता और यौनिक संबंधों के प्रति समाज का दृष्टिकोण अलग-अलग रहा है। प्राचीन भारतीय साहित्य, कला और धार्मिक ग्रंथों में लैंगिक विविधता के अनेक उदाहरण मिलते हैं, जो यह दर्शाते हैं कि समलैंगिकता या लैंगिक विविधता कोई नया या आधुनिक विचार नहीं है।
प्राचीन भारतीय ग्रंथों और पुराणों में अनेक ऐसी कथाएँ मिलती हैं जिनमें लैंगिक पहचान और संबंधों की विविधता का उल्लेख मिलता है। कामसूत्र जैसे ग्रंथों में भी विभिन्न प्रकार के यौनिक व्यवहारों का उल्लेख किया गया है। इसके अतिरिक्त कई मंदिरों की मूर्तियों और कलाकृतियों में भी लैंगिक विविधता से जुड़े चित्रण देखने को मिलते हैं। इन उदाहरणों से यह स्पष्ट होता है कि प्राचीन समाज में लैंगिक विविधताओं की उपस्थिति को पूरी तरह अस्वीकार नहीं किया गया था।
मध्यकालीन काल में सामाजिक और धार्मिक संरचनाओं में परिवर्तन होने लगा, जिसके कारण लैंगिकता से जुड़े विषयों को अधिक नियंत्रित और सीमित रूप में देखा जाने लगा। समाज में नैतिकता और धार्मिक मान्यताओं के आधार पर कई प्रकार के व्यवहारों को स्वीकार या अस्वीकार किया जाने लगा। इसी प्रक्रिया में समलैंगिकता को धीरे-धीरे सामाजिक रूप से अस्वीकार्य माना जाने लगा।
औपनिवेशिक काल में स्थिति और अधिक जटिल हो गई। ब्रिटिश शासन के दौरान भारतीय दंड संहिता की धारा 377 लागू की गई, जिसमें समलैंगिक संबंधों को अपराध के रूप में परिभाषित किया गया। इस कानून ने समलैंगिकता को सामाजिक और कानूनी दोनों स्तरों पर अपराध के रूप में स्थापित कर दिया। इसके परिणामस्वरूप समलैंगिक व्यक्तियों को लंबे समय तक सामाजिक कलंक और कानूनी भय के साथ जीवन जीना पड़ा।
स्वतंत्रता के बाद भी लंबे समय तक इस विषय पर सार्वजनिक चर्चा सीमित रही। समाज में समलैंगिकता को लेकर कई प्रकार की भ्रांतियाँ और पूर्वाग्रह बने रहे। हालांकि 21वीं सदी में सामाजिक और कानूनी स्तर पर महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं। विशेष रूप से न्यायालय के महत्वपूर्ण निर्णयों ने समलैंगिकता को अपराध की श्रेणी से बाहर कर दिया और इसे व्यक्तिगत स्वतंत्रता तथा मानवाधिकार के संदर्भ में देखने की दिशा में कदम बढ़ाए।
इन परिवर्तनों के बावजूद समाज के विभिन्न वर्गों में समलैंगिकता के प्रति दृष्टिकोण समान नहीं है। सामाजिक संरचना, शिक्षा, आर्थिक स्थिति और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के आधार पर लोगों के विचारों में अंतर देखने को मिलता है। विशेष रूप से शहरी और ग्रामीण समाज के बीच इस विषय को लेकर दृष्टिकोण में स्पष्ट भिन्नता दिखाई देती है।

शहरी समाज में समलैंगिकता के प्रति दृष्टिकोण

शहरी समाज को सामान्यतः अधिक आधुनिक और परिवर्तनशील सामाजिक संरचना के रूप में देखा जाता है। शहरों में शिक्षा, रोजगार, मीडिया और विभिन्न सांस्कृतिक प्रभावों की उपलब्धता अधिक होती है। इसके कारण लोगों के विचारों और जीवनशैली में अपेक्षाकृत अधिक विविधता देखने को मिलती है।
शहरी क्षेत्रों में रहने वाले लोग विभिन्न सामाजिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों से आते हैं। इस प्रकार का सामाजिक मिश्रण लोगों के दृष्टिकोण को अधिक खुला और उदार बनाने में सहायक होता है। शिक्षा के प्रसार और आधुनिक विचारों के प्रभाव से शहरों में लैंगिक विविधताओं के प्रति जागरूकता बढ़ी है। कई शैक्षणिक संस्थानों, सामाजिक संगठनों और मीडिया माध्यमों के द्वारा लैंगिक समानता और मानवाधिकार से जुड़े विषयों पर चर्चा की जाती है।
मीडिया और सोशल मीडिया ने भी समलैंगिकता से जुड़े मुद्दों को सार्वजनिक विमर्श का हिस्सा बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। फिल्मों, वेब सीरीज, समाचार माध्यमों और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के माध्यम से लैंगिक विविधता से जुड़े विषयों को व्यापक स्तर पर प्रस्तुत किया जा रहा है। इसके परिणामस्वरूप समाज के एक बड़े वर्ग में इस विषय के प्रति समझ और संवेदनशीलता बढ़ी है।
इसके अतिरिक्त शहरी क्षेत्रों में व्यक्तिगत स्वतंत्रता को अपेक्षाकृत अधिक महत्व दिया जाता है। यहाँ लोग अपने जीवन के निर्णयों को

© 2026 डॉ. सुरभि गोस्वामी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

स्वयं लेने के प्रति अधिक स्वतंत्र महसूस करते हैं। इस कारण समलैंगिक व्यक्तियों को अपनी पहचान को व्यक्त करने के लिए अपेक्षाकृत अधिक अवसर मिलते हैं।

हालाँकि यह कहना भी पूरी तरह सही नहीं होगा कि शहरी समाज में समलैंगिकता को पूरी तरह स्वीकार कर लिया गया है। अभी भी कई सामाजिक और पारिवारिक स्तरों पर विरोध और असहमति देखने को मिलती है। कई परिवारों में समलैंगिकता को लेकर संकोच और अस्वीकृति बनी हुई है। इसके बावजूद यह कहा जा सकता है कि शहरी समाज में इस विषय पर चर्चा और स्वीकार्यता की प्रक्रिया धीरे-धीरे विकसित हो रही है।

ग्रामीण समाज में समलैंगिकता के प्रति दृष्टिकोण

ग्रामीण समाज की सामाजिक संरचना सामान्यतः परंपराओं, सांस्कृतिक मान्यताओं और सामुदायिक मूल्यों पर आधारित होती है। ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक जीवन अपेक्षाकृत अधिक सामूहिक होता है, जहाँ व्यक्ति के व्यवहार और जीवनशैली पर समुदाय का प्रभाव अधिक होता है। इसी कारण सामाजिक मान्यताओं और परंपराओं का पालन करना ग्रामीण जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा माना जाता है।

समलैंगिकता के संदर्भ में ग्रामीण समाज का दृष्टिकोण प्रायः रूढ़िवादी माना जाता है। कई ग्रामीण क्षेत्रों में इस विषय पर खुलकर चर्चा करना भी असामान्य समझा जाता है। समलैंगिक संबंधों को अक्सर सामाजिक और सांस्कृतिक मानदंडों के विरुद्ध माना जाता है, जिसके कारण ऐसे संबंधों को सामाजिक स्वीकृति प्राप्त करना कठिन हो जाता है।

ग्रामीण समाज में पारिवारिक संरचना भी इस दृष्टिकोण को प्रभावित करती है। यहाँ परिवार को सामाजिक जीवन की मूल इकाई माना जाता है और विवाह को परिवार तथा समाज की निरंतरता के लिए आवश्यक समझा जाता है। इस कारण विषमलैंगिक विवाह को ही सामान्य और स्वीकार्य माना जाता है। समलैंगिक संबंधों को अक्सर परिवार की परंपराओं और सामाजिक प्रतिष्ठा के विरुद्ध समझा जाता है।

इसके अतिरिक्त ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा और सूचना के संसाधनों की सीमित उपलब्धता भी इस विषय के प्रति दृष्टिकोण को प्रभावित करती है। कई बार समलैंगिकता के बारे में सही जानकारी के अभाव में लोगों के बीच भ्रांतियाँ और पूर्वाग्रह विकसित हो जाते हैं। परिणामस्वरूप समलैंगिक व्यक्तियों को सामाजिक अस्वीकृति और उपेक्षा का सामना करना पड़ता है।

ग्रामीण समाज में सामाजिक नियंत्रण की प्रक्रिया भी अपेक्षाकृत अधिक मजबूत होती है। व्यक्ति के व्यवहार पर परिवार, पड़ोस और समुदाय का प्रभाव होता है। यदि कोई व्यक्ति सामाजिक मानदंडों से भिन्न व्यवहार करता है तो उसे आलोचना या सामाजिक दबाव का सामना करना पड़ सकता है। इसी कारण कई समलैंगिक व्यक्ति अपनी पहचान को सार्वजनिक रूप से व्यक्त करने से बचते हैं और अक्सर अपनी वास्तविक पहचान को छिपाकर जीवन व्यतीत करते हैं।

हालाँकि यह भी ध्यान देने योग्य है कि सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया ग्रामीण समाज को भी प्रभावित कर रही है। शिक्षा का प्रसार, मीडिया की पहुँच और शहरों से संपर्क बढ़ने के कारण ग्रामीण युवाओं के दृष्टिकोण में धीरे-धीरे परिवर्तन दिखाई देने लगा है। फिर भी समलैंगिकता के प्रति पूर्ण सामाजिक स्वीकृति अभी भी एक चुनौती बनी हुई है।

शहरी और ग्रामीण समाज का तुलनात्मक विश्लेषण

समलैंगिकता के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण को समझने के लिए शहरी और ग्रामीण समाज की तुलना करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। दोनों सामाजिक परिवेशों की संरचना, जीवनशैली, शिक्षा के स्तर और सांस्कृतिक प्रभावों में काफी अंतर होता है, जिसके कारण इस विषय के प्रति लोगों की धारणाएँ भी भिन्न हो जाती हैं।

शहरी समाज में शिक्षा और आधुनिक विचारों का प्रभाव अधिक होता है। यहाँ लोग विभिन्न सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों से आते हैं और विविधता के साथ रहने का अनुभव प्राप्त करते हैं। इसके कारण शहरी समाज में समलैंगिकता जैसे विषयों पर चर्चा अपेक्षाकृत अधिक खुलकर होती है। कई शैक्षणिक संस्थानों और सामाजिक संगठनों के माध्यम से लैंगिक समानता और मानवाधिकार से जुड़े मुद्दों पर जागरूकता बढ़ाने के प्रयास भी किए जाते हैं।

इसके विपरीत ग्रामीण समाज में सामाजिक संरचना अधिक पारंपरिक होती है। यहाँ सामुदायिक जीवन और पारिवारिक परंपराओं का प्रभाव अधिक होता है। सामाजिक मानदंडों से भिन्न व्यवहार को अक्सर स्वीकार नहीं किया जाता। परिणामस्वरूप समलैंगिकता को कई बार सामाजिक विचलन के रूप में देखा जाता है।

दोनों समाजों के बीच एक महत्वपूर्ण अंतर सूचना और संचार के साधनों की उपलब्धता से भी जुड़ा है। शहरी क्षेत्रों में इंटरनेट, सोशल मीडिया और विभिन्न मीडिया माध्यमों की पहुँच अधिक होती है, जिसके कारण लोगों को लैंगिक विविधता से जुड़े मुद्दों के बारे में अधिक जानकारी मिलती है। इसके विपरीत ग्रामीण क्षेत्रों में सूचना के स्रोत अपेक्षाकृत सीमित होते हैं, जिससे इस विषय के प्रति जागरूकता भी कम होती है।

हालाँकि यह अंतर धीरे-धीरे कम हो रहा है। आधुनिक तकनीक और शिक्षा के विस्तार के कारण ग्रामीण क्षेत्रों में भी नए विचारों का प्रसार हो रहा है। विशेष रूप से युवा पीढ़ी के बीच लैंगिक विविधता के प्रति अपेक्षाकृत अधिक समझ विकसित हो रही है। इसके बावजूद सामाजिक स्वीकृति की प्रक्रिया अभी भी धीमी है और कई सामाजिक बाधाएँ मौजूद हैं।

इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि शहरी और ग्रामीण समाज में समलैंगिकता के प्रति दृष्टिकोण कई सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक कारकों से प्रभावित होता है। जहाँ शहरी समाज में अपेक्षाकृत अधिक उदारता दिखाई देती है, वहीं ग्रामीण समाज में पारंपरिक मान्यताओं का प्रभाव अधिक बना हुआ है।

समलैंगिक व्यक्तियों की सामाजिक चुनौतियाँ

समलैंगिक व्यक्तियों को समाज में अनेक प्रकार की सामाजिक और मनोवैज्ञानिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इन चुनौतियों का संबंध केवल व्यक्तिगत जीवन से ही नहीं होता, बल्कि यह सामाजिक संरचना, सांस्कृतिक मान्यताओं और पारिवारिक अपेक्षाओं से भी जुड़ा होता है।

भारतीय समाज में समलैंगिकता को लेकर लंबे समय तक नकारात्मक धारणाएँ बनी रही हैं। कई लोगों के बीच यह धारणा प्रचलित रही कि समलैंगिकता सामाजिक मानदंडों के विरुद्ध है। इसके परिणामस्वरूप

© 2026 डॉ. सुरभि गोस्वामी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

समलैंगिक व्यक्तियों को अक्सर सामाजिक अस्वीकृति, उपहास और भेदभाव का सामना करना पड़ता है।

परिवार के स्तर पर भी समलैंगिक व्यक्तियों को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। कई परिवारों में समलैंगिकता को स्वीकार करना कठिन माना जाता है और परिवार के सदस्य व्यक्ति पर पारंपरिक विवाह करने का दबाव डालते हैं। इस प्रकार की परिस्थितियों में कई समलैंगिक व्यक्तियों को अपनी वास्तविक पहचान को छिपाने के लिए मजबूर होना पड़ता है।

इसके अतिरिक्त सामाजिक कलंक भी एक महत्वपूर्ण चुनौती के रूप में सामने आता है। समाज में प्रचलित नकारात्मक धारणाओं के कारण समलैंगिक व्यक्तियों को कई बार सामाजिक बहिष्कार या आलोचना का सामना करना पड़ता है। इससे उनके मानसिक स्वास्थ्य और आत्मसम्मान पर भी प्रभाव पड़ता है।

शिक्षा और कार्यस्थल के संदर्भ में भी समलैंगिक व्यक्तियों को कई बार भेदभाव का अनुभव होता है। कुछ स्थितियों में उन्हें उपेक्षा, असमान व्यवहार या सामाजिक दूरी का सामना करना पड़ता है। हालाँकि पिछले कुछ वर्षों में जागरूकता बढ़ने के कारण इन स्थितियों में धीरे-धीरे परिवर्तन दिखाई देने लगा है।

सामाजिक परिवर्तन और स्वीकृति की प्रक्रिया

समाज स्थिर नहीं होता, बल्कि समय के साथ उसमें निरंतर परिवर्तन होता रहता है। समलैंगिकता के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण में भी पिछले कुछ वर्षों में परिवर्तन देखने को मिला है। शिक्षा के प्रसार, मीडिया की भूमिका और मानवाधिकार आंदोलनों के प्रभाव से समाज में लैंगिक विविधता के प्रति जागरूकता बढ़ी है।

मीडिया और सोशल मीडिया ने इस परिवर्तन की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। विभिन्न मीडिया माध्यमों के माध्यम से समलैंगिकता से जुड़े मुद्दों को सार्वजनिक विमर्श का हिस्सा बनाया गया है। फिल्मों, साहित्य और डिजिटल मंचों के माध्यम से लैंगिक विविधता को नए दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया गया है।

कानूनी स्तर पर भी कई महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं जिन्होंने समलैंगिक व्यक्तियों के अधिकारों को मान्यता देने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इन परिवर्तनों ने समाज में इस विषय पर चर्चा को प्रोत्साहित किया है और लोगों के दृष्टिकोण में धीरे-धीरे बदलाव लाने में सहायता की है।

विशेष रूप से युवा पीढ़ी के बीच लैंगिक विविधता के प्रति अपेक्षाकृत अधिक संवेदनशीलता दिखाई देती है। आधुनिक शिक्षा और वैश्विक संपर्क के कारण युवा पीढ़ी पारंपरिक सामाजिक धारणाओं को नए दृष्टिकोण से समझने का प्रयास कर रही है।

हालाँकि सामाजिक स्वीकृति की प्रक्रिया अभी भी पूर्ण नहीं हुई है। कई सामाजिक और सांस्कृतिक बाधाएँ अभी भी मौजूद हैं। इसलिए आवश्यक है कि समाज में जागरूकता और संवेदनशीलता को बढ़ावा दिया जाए ताकि सभी व्यक्तियों को सम्मान और समानता के साथ जीवन जीने का अवसर मिल सके।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि समलैंगिकता के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण समाज के विभिन्न परिवेशों में समान नहीं है। शहरी और ग्रामीण समाज की सामाजिक संरचना, शिक्षा का स्तर, सांस्कृतिक मान्यताएँ और सूचना के स्रोत इस विषय के प्रति लोगों के दृष्टिकोण को प्रभावित करते हैं।

शहरी समाज में शिक्षा, मीडिया और वैश्विक संपर्क के कारण समलैंगिकता के प्रति अपेक्षाकृत अधिक जागरूकता और सहिष्णुता दिखाई देती है। इसके विपरीत ग्रामीण समाज में पारंपरिक सामाजिक मान्यताओं और सामुदायिक नियंत्रण के कारण इस विषय के प्रति दृष्टिकोण अपेक्षाकृत रूढ़िवादी बना हुआ है।

इसके बावजूद यह भी देखा जा सकता है कि सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया दोनों समाजों को प्रभावित कर रही है। शिक्षा के प्रसार, मीडिया की पहुँच और नई पीढ़ी के दृष्टिकोण के कारण समलैंगिकता के प्रति समाज में धीरे-धीरे सकारात्मक परिवर्तन दिखाई देने लगे हैं।

समावेशी और समानतापूर्ण समाज के निर्माण के लिए यह आवश्यक है कि लैंगिक विविधता को सामाजिक वास्तविकता के रूप में स्वीकार किया जाए और सभी व्यक्तियों को सम्मान, समानता और स्वतंत्रता के साथ जीवन जीने का अवसर प्रदान किया जाए।

संदर्भ सूची

1. Altman D. *The end of the homosexual?* Brisbane: University of Queensland Press; 2013.
2. Butler J. *Gender trouble: Feminism and the subversion of identity.* New York: Routledge; 1990.
3. Connell RW. *Gender in world perspective.* 2nd ed. Cambridge: Polity Press; 2009.
4. Foucault M. *The history of sexuality: Volume 1 – An introduction.* New York: Pantheon Books; 1978.
5. Giddens A. *Sociology.* 6th ed. Cambridge: Polity Press; 2009.
6. Goffman E. *Stigma: Notes on the management of spoiled identity.* Englewood Cliffs (NJ): Prentice Hall; 1963.
7. Kimmel MS. *The gendered society.* New York: Oxford University Press; 2007.
8. Nayar PK. *Sociology of gender.* New Delhi: Sage Publications; 2012.
9. Plummer K. *Telling sexual stories: Power, change and social worlds.* London: Routledge; 1995.
10. Seidman S. *Contested knowledge: Social theory today.* 5th ed. Oxford: Wiley-Blackwell; 2013.
11. Weeks J. *Sexuality.* 3rd ed. London: Routledge; 2010.
12. Jeffreys S. *Unpacking queer politics.* Cambridge: Polity Press; 2003.
13. Richardson D, Seidman S. *Handbook of lesbian and gay studies.* London: Sage Publications; 2002.
14. Jagose A. *Queer theory: An introduction.* New York: New York University Press; 1996.

© 2026 डॉ. सुरभि गोस्वामी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

15. Blackwood E, Wieringa S. *Female desires: Same-sex relations and transgender practices across cultures.* New York: Columbia University Press; 1999.

Creative Commons License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–NonCommercial–NoDerivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) License. This license permits users to copy and redistribute the material in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and the source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted.

About the corresponding author

डॉ. सुरभि गोस्वामी ने समाजशास्त्र विषय में वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान से पीएच.डी. उपाधि प्राप्त की है। इनका शोध क्षेत्र जेंडर स्टडीज़ के अंतर्गत समलैंगिकता से संबंधित सामाजिक एवं सांस्कृतिक पहलुओं पर केंद्रित है। इन्होंने समकालीन भारतीय समाज में समलैंगिकता के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण एवं स्वीकृति के मुद्दों पर गहन अध्ययन किया है। प्रस्तुत शोध पत्र शहरी एवं ग्रामीण समाज में समलैंगिकता के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण के तुलनात्मक अध्ययन पर आधारित है।

© 2026 डॉ. सुरभि गोस्वामी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/